तृतीय विधान सभा के अंतिम सत्र के समापन अवसर पर

माननीय विधान सभा अध्यक्ष महोदय का सम्बोधन

17 जुलाई, 2013

तृतीय विधान सभा के तेरहवां सत्र का आज अंतिम कार्य दिवस है, जो कि इस विधान सभा के लिये अंतिम सत्र भी है । यह मानसून सत्र 15 जुलाई से 19 जुलाई, 2013 तक आहूत था परन्तु परिस्थितिजन्य कारणों से निर्धारित तिथि पूर्व यह सत्र सम्पन्न हो रहा है।

प्रथम सत्र से तेरहवें सत्र तक की अनेक स्मृतियॉ लेकर आज हम बिदा हो रहे हैं क्योंकि आगामी सत्र अब इस विधान सभा के विघटन और चतुर्थ विधान सभा गठन के पश्चात् होगा । आज जबकि इस सत्र के समापन अवसर पर सम्बोधन के लिये खड़ा हूॅ तो मेरा मन भावूक एवं दुःखी है । इस तृतीय विधान सभा की अवधि में ईश्वर की नियती के समक्ष नतमस्तक होते हुये हमने इस सभा के सदस्य सर्वश्री रविशंकर त्रिपाठी, मदन साहू एवं नंद कुमार पटेल को असमय ही अपने बीच में से पंचतत्व में विलीन होते हुये देखा ।

ईश्वर की इस नियती के समक्ष हम सब लाचार एवं मजबूर हैं, लेकिन मैं अपने आपको कहने से रोक नहीं पा रहा हूॅ जिस स्थिति एवं जिन परिस्थितियों में इस सभा के सदस्य श्री नंद कुमार पटेल, उनके बेटे श्री दिनेश पटेल के साथ इस सभा के पूर्व नेता प्रतिपक्ष श्री महेन्द्र कर्मा एवं पूर्व सदस्य श्री उदय मुदलियार तथा छत्तीसगढ़ के वरिष्ठतम वयोवृद्ध पूर्व सांसद श्री विद्याचरण शुक्ल असमय नक्सलियों द्वारा की गई कार्यवाही में शहीद हुये, इस घटना को हम जीवन पर्यन्त विस्मृत नहीं कर सकेंगे । नक्सलियों द्वारा यह हमला किसी जन–प्रतिनिधि अथवा किसी दल विशेष के सदस्य के ऊपर नहीं था अपितु यह इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था के ऊपर था, जिसका नक्सली हमेशा विरोध करते हैं और आज आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था को किस प्रकार मजबूत किया जाये ? इस व्यवस्था में जन–जन का विश्वास स्थापित एवं सुदृढ़ हो, इस हेतु आवश्यक कदम शीघ्रता–शीघ्र उठाये जायें ।

इस सभा के सदस्यों ने विगत लगभग 5 वर्षों के 12 सत्रों में उच्च संसदीय मापदण्डों एवं परम्पराओं का अनुसरण किया है । इस तेरहवें सत्र में भावनाओं ने सम्पूर्ण कार्यवाही को प्रभावित किया, जो मेरे मत में स्वाभाविक भी था ।

नक्सलवाद की समस्या एक ऐसी समस्या है, जो केवल इस प्रदेश तक ही सीमित नहीं है अपितु हमारे पड़ोसी राज्य झारखण्ड, बिहार, उडीसा, महाराष्ट्र में भी नक्सली इसी प्रकार की घटनाओं को अंजाम देते हैं । इस समस्या पर अब राष्ट्रीय स्तर पर भी विचार–मंथन आरंभ हुआ है और हम विश्वास कर सकते हैं कि केन्द्र एवं राज्यों की सरकारें मिलकर इस समस्या का निदान करने में सफल होंगी ।

तृतीय विधान सभा का कार्यकाल अपनी पूर्णता की ओर है और जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो इसमें कुछ अत्यंत सुखद और दुखद स्मृतियां मस्तिष्क पटल पर सहज रूप से उभर आती है । जहॉ एक ओर हमने तृतीय विधान सभा के कार्यकाल में दिनांक 25 से 29 अक्टूबर, 2010 के मध्य अन्तराष्ट्रीय स्तर का संसदीय सम्मेलन ''चतुर्थ इंडिया एशिया राष्ट्रकुल संसदीय संघ सम्मेलन'' का सफलतापूर्वक आयोयजन किया । वहीं 24 जून, 2011 को भारत के माननीय राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल जी का छत्तीसगढ़ विधान सभा आगमन और आप माननीय सदस्यों को सम्बोधन हुआ । इस विधान सभा के कार्यकाल में ही छत्तीसगढ़ की विधान सभा ऐसी प्रथम विधान सभा होने का गौरव हासिल किया जहॉ खाद्य सुरक्षा अधिनियम अधिनियमित हुआ । इसके अलावा अनेक ऐसे महत्वपूर्ण कार्य तृतीय विधान सभा के कार्यकाल में सम्पन्न हुये जो छत्तीसगढ़ के संसदीय इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षर से अंकित हुये । भविष्य में इन्हीं उपलब्धियों के लिये तृतीय विधान सभा को स्मरण किया जायेगा ।

इस अवसर पर मैं आप माननीय सदस्यों से विशेषकर प्रतिपक्ष के सदस्यों से विशेष रूप से आग्रह करूॅगा कि शीघ्र ही हम आपस में चर्चा कर एक तिथि का निर्धारण कर लें जिसमें हम अपनी तृतीय विधान सभा के बिदाई समारोह, समूह छायाचित्र के कार्यक्रम को सादे समारोह के रूप में आयोजित करने पर विचार कर सकते हैं । मैं आप सभी की भावनाओं से अवगत और सहमत हूॅ कि सदन के माननीय सदस्य के आकस्मिक निधन से जो परिस्थितियॉ उत्पन्न हुई हैं उससे हम सभी आहत हैं परन्तु स्थापित परम्पराओं के अनुसार आप सभी जानते हैं कि किसी भी विधान सभा के लिये बिदाई समारो ह एक आवश्यक भाग होता है क्योंकि आज का यह वर्तमान कल का इतिहास होगा और हमारा प्रयास होना चाहिये कि इतिहास के पन्नों में तृतीय विधान सभा का कोई भी पृष्ठ अधूरा न रहे ।

इस अवसर पर आप सभी माननीय सदस्यों के प्रति मैं अपनी सद्इच्छा, सद्भावना प्रकट करता हूॅ तथा कामना करता हूॅ कि आपका अपना राजनैतिक और सामाजिक जीवन के साथ–साथ आपका पारिवारिक जीवन भी सुखमय हो । आप सभी अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें । आपके राजनैतिक जीवन में भूमिका चाहे आपकी पक्ष में हो अथवा प्रतिपक्ष में, पर उद्देश्य आपके हृदय में जनसेवा का शाश्वत रूप से बना रहे । यही मेरी इस अवसर पर आप सभी के प्रति मंगल कामना है ।

अंत में इस सत्र के समापन अवसर पर मैं पुनश्च माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूॅ कि उन्होंने सदन के संचालन में मुझे सहयोग दिया । मैं माननीय उपाध्यक्ष जी एवं सदन के सभापति के दायित्व का निर्वहन करने के लिये और मुझे सहयोग देने के लिये मैं इस सदन की सभापति तालिका के सदस्यों के प्रति धन्यवाद प्रेषित करता हूॅ । मैं इस अवसर पर समस्त माननीय सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूॅ कि उन्होंने तृतीय विधान सभा की इस अवधि में आसंदी की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुये इस सदन की गरिमा बनाये रखी । समस्त माननीय सदस्यों के द्वारा आसंदी को दिये गये सहयोग के लिये भी मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूॅ।

इस अवसर पर लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने वाले मीडिया का भी उल्लेख करना चाहता हूॅ । छत्तीसगढ़ राज्य नवगठित राज्य था और सभा की कार्यवाही को जन–जन तक पहुॅचाने की महती जिम्मेदारी मीडिया के प्रतिनिधियों के ऊपर

थी। संसदीय विषयों से जुड़ी हुई प्रत्येक गतिविधि, सदन की चर्चाओं की हुबहु जानकारी देने का गुरूत्तरदायित्व उन्होंने सफलता निभाया ।

तृतीय विधान सभा के कार्यकाल में सम्पादित हुये पूर्व सत्रों को सफलतापूर्वक पूर्ण कराने के लिये राज्य शासन के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूँ कि उन्होंने अपने दायित्वों का गंभीरता से परिपालन किया । इस अवसर पर मैं सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूँ जिन्होंने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था को पूरे सत्रकाल में कायम रखा । इस सत्र के समापन अवसर पर मैं अपने विधान सभा सचिवालय के प्रमुख सचिव एवं सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूँ कि उनके समन्वित सहयोग से इस सत्र का सुचारू संचालन संभव हो सका।

इस तृतीय विधान सभा के अंतिम सत्र के समापन अवसर पर मैं आप सभी से पुनः आव्हान करता हूँ कि आइये, छत्तीसगढ़ राज्य के विकास और समृद्धि के पावन अनुष्ठान में हम अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर लोकतंत्र को और अधिक सशक्त, समृद्ध और शक्तिशाली बनाने का समवेत रूप से दृढ़ संकल्प लें ।

धन्यवाद

जय हिन्द ! जय भारत ! जय छत्तीसगढ़ !